चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..........दैनिक जागरण..........

दिनांक ..2.1.2021.. पृष्ठ संख्या....3.... कॉलम..1-4..

बदलाव | 45 वर्ष में तिलहन फसलों का बढ़ा क्षेत्र, कुलपति ने तिलहन अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र में चल रहे प्रयोगों का लिया जायजा

सरसों की हाईब्रिड किस्म तैयार करने की दिशा में जुटे विज्ञानी

जागरण संवाददाता, हिसार : वर्तमान में कम गुणवत्ता वाले खानपान के कारण लोगों का स्वास्थ्य बिगड़ रहा है। खाद्य पदार्थों में तेल का भी प्रमुख योगदान है। खाने में कौन सी किस्म का तेल प्रयोग करें इसको लेकर असमंजस की स्थिति बनी रहती है।

इसी समस्या को दूर करने का काम चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में किया जा रहा है। एचएयू के तिलहन अनुभाव के विज्ञानी मनुष्य के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए तेल की महत्ता व गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए शोध कर रहे हैं।

संकर किस्मों को कर रहे विकसित : इसके लिए वह अब संकर किस्मों को विकसित करने का कार्य कर रहे हैं। शुक्रवार को विज्ञानियों का शोध देखते एचएयू के कुलपति प्रो. समर सिंह पहुंचे। उन्होंने तिलहन बढ़ोत्तरी को लेकर कई जानकारियां साझा की।

विश्वविद्यालय के तिलहन अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र में कृषि वैज्ञानिकों से बातचीत करते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व जानकारी देते वैज्ञानिक। • पीआरओ।

सरसों की यह किस्म हरियाणा सहित दूसरे राज्यों में दे रही पैदावार

विकसित सरसों की आर एच 725 उन्नत किस्म बारानी व सिंचित क्षेत्र के लिए समय पर बिजाई के लिए उत्तम किस्म मानी जाती है। तिलहन अनुभाग के अध्यक्ष डा. रामअवतार ने बताया कि इस किस्म की औसत पैदावार भी 25-26 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है और इसमें तेल की मात्रा भी लगभग 40 फीसद तक होती है। यही कारण है कि इस किस्म के बीज की न केवल हरियाणा बल्कि राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब व बिहार आदि प्रदेशा में भी बहुत अधिक मांग है।

45 वर्षों में तिलहन 464 से 2018 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर

प्रदेश को मुख्य रूप से धान और गेहूं के लिए जाना जाता है। मगर पिछले 45 वर्षों में तिलहन ने भी अब अपनी ठीक ठाक जगह बना ली है। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता व आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डा. एके छाबड़ा ने बताया वर्ष 1972-73 में तिलहन की पैदावार जहां 464 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर होती थी जो 2018 तक 2018 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तक पहुंच चुकी है। खास बात यह है कि एचएयू ने अब तक राया व सरसों की 20 किस्मों को विकसित की हैं, जिसमें 11 राज्य व 9 राष्ट्रीय स्तर की हैं।

कृषि क्षेत्र में विकसित की जाने वाली नई तकनीक हर किसान की पहुच तक होनी चाहिए। प्रदेश मे तिलहन अनुभाग के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित सरसों व राया की उन्नत किस्मों से ही उत्पादन में अद्वितीय बढ़ोतरी हुई है, जो विश्वविद्यालय के लिए गौरव की बात है। हमनें विज्ञानियों से सभी फसलों की हाइब्रिड किस्मों को विकसित करने के बारे में कहा है।
-प्रो समर सिंह, कुलपति, एचएयू।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक सवेरा.....

दिनांक 2.1.2024...पृष्ठ संख्या.....1.....कॉलम.....3-6.....

हकृवि कुलपति ने विश्वविद्यालय के तिलहन अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र में चल रहे प्रयोगों का लिया जायजा

वैज्ञानिकों की नई किस्मों व तकनीक अपना रहे किसान : प्रो. समर

हिसार, 1 जनवरी (सुरेंद्र सोढी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने शुक्रवार को विश्वविद्यालय के तिलहन अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र में चल रहे प्रयोगों का जायजा लिया। इस मौके पर कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई नई तकनीकों व विभिन्न किस्मों की उन्नत किस्मों को किसानों द्वारा अपनाया जाना ही वैज्ञानिकों के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि है। वैज्ञानिक किसानों की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए विभिन्न माध्यमों से उनकी आय में बढ़ोतरी के लिए प्रयासरत है।

उन्होंने कहा कि कुं बार देखने में आया है कि ऐसी तकनीक व उपकरण को इजाद कर लिया जाता है, जो आम किसान की पहुंच से बाहर होती है, ऐसे में किसान को उसका फायदा नहीं मिल पाता। इसलिए कृषि क्षेत्र में विकसित की जाने वाली नई तकनीक हर किसान की पहुंच तक होनी चाहिए। किसी भी उपकरण की कीमत व उसके अधिकाधिक उपयोग को ध्यान में रखकर ही नई तकनीक खोजनी चाहिए। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह के दौरे के अवसर पर कुलपति के ओएसडी डॉ. एम.एस.सिद्धपुरिया के अलावा अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. नीरज कुमार, डॉ. दलीप सिंह, डॉ. राकेश पूनिया, डॉ. निशा, डॉ. विनोद गोयल, डॉ. नीता लाकड़ा, डॉ. विवेक, डॉ. महावीर, डॉ. राजवीर सिंह, डॉ. मनजीत, रोहित आदि मौजूद थे।

विश्वविद्यालय के तिलहन अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र में कृषि वैज्ञानिकों से बातचीत करते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह व जानकारी देते वैज्ञानिक।

पांच गुणा बढ़ा राया व तिलहन का उत्पादन : डॉ. ए.के. छाबड़ा

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता व आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि वर्ष 1972-73 में राया व सरसों का उत्पादन प्रति हेक्टेयर 464 किलोग्राम था जो वर्ष 2017-18 में बढकर 2018 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गया है, जो विश्वविद्यालय के लिए बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय ने अब तक राया व सरसों की 20 किस्मों को विकसित किया है, जिसमें 11 राज्य व 9 राष्ट्रीय स्तर की हैं। मनुष्य के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए तेल की महत्ता व गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए अनुभाग की ओर से संकर किस्मों को विकसित करने का कार्य प्रगति पर है।

सरसों व राया की विभिन्न किस्मों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी

तिलहन अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. रामअवतार ने कुलपति महोदय को सरसों व राया की विभिन्न किस्मों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यहां से विकसित सरसों की आर एच 725 उन्नत किस्म बारानी व सिंचित क्षेत्र के लिए समय पर बिजाई के लिए उत्तम किस्म है। इसकी औसत पैदावार भी 25-26 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है और इसमें तेल की मात्रा भी लगभग 40 प्रतिशत तक होती है। यही कारण है कि इस किस्म के बीज की न केवल हरियाणा बल्कि राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब व बिहार में भी बहुत अधिक मांग है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक 2.1.2021 पृष्ठ संख्या.....4.....कॉलम.....6-8.....

'हर किसान तक हो नई तकनीक की पहुंच'

हकृवि के कुलपति ने तिलहन अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र का लिया जायजा

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई नई तकनीकों व विभिन्न किस्मों की उन्नत किस्मों को किसानों द्वारा अपनाया जाना ही वैज्ञानिकों के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि है।

वैज्ञानिक किसानों की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए विभिन्न माध्यमों से उनकी आय में बढ़ोतरी के लिए प्रयासरत है। यह बात उन्होंने शुक्रवार को विश्वविद्यालय के तिलहन अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र में चल रहे प्रयोगों का जायजा लेने के बाद वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि कई बार देखने में आया है कि ऐसी तकनीक व उपकरण को इजाद कर लिया जाता है, जो आम किसान की पहुंच से बाहर होती है, ऐसे में किसान को उसका फायदा नहीं मिल पाता। इसलिए कृषि क्षेत्र में विकसित की जाने वाली नई तकनीक हर किसान की पहुंच तक होनी चाहिए। किसी भी उपकरण की कीमत व उसके अधिकाधिक उपयोग को ध्यान में रखकर ही नई तकनीक खोजनी चाहिए। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे सभी फसलों की हाइब्रिड किस्मों को विकसित करने पर जोर दें। इस दौरान कुलपति ने अनुसंधान कार्यों के अलावा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित परियोजनाओं का भी अवलोकन किया। इस अवसर पर डॉ. एके छाबड़ा, डॉ. रामअवतार, डॉ. एमएस सिद्धपुरिया, डॉ. नीरज कुमार, डॉ. दलीप आदि मौजूद रहे।

कृषि वैज्ञानिकों से बातचीत करते कुलपति प्रो. समर सिंह। अमर उजाला

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम...... दैनिक भास्कर ......

दिनांक 2.1.2021 पृष्ठ संख्या 2 कॉलम 5

वीसी ने तिलहन अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र में चल रहे प्रयोगों का लिया जायजा

हिसार | एचएयू के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहा कि विवि के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की नई तकनीकों व विभिन्न उन्नत किस्मों को किसानों द्वारा अपनाया जाना वैज्ञानिकों के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि है। ये विचार उन्होंने विवि के तिलहन अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र में चल रहे प्रयोगों का जायजा लेने के बाद वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। तिलहन अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. रामअवतार ने सरसों व राया की विभिन्न किस्मों के बारे में जानकारी दी। इस मौके पर कुलपति के ओएसडी डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया के अलावा अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. नीरज कुमार, डॉ. दलीप सिंह, डॉ. राकेश पूनिया, डॉ. निशा, डॉ. विनोद गोयल, डॉ. नीता लाकड़ा, डॉ. विवेक, डॉ. महावीर,डॉ. राजवीर सिंह, डॉ. मनजीत और रोहित आदि मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....हरियाणा वाटिका....

दिनांक 1.1.2021...पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

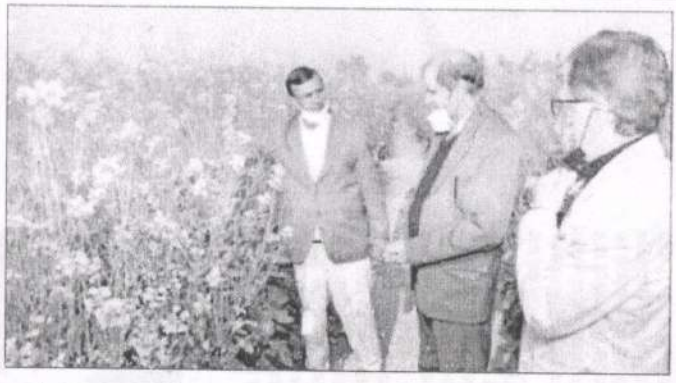

वैज्ञानिकों की नई किस्मों व तकनीकों को किसानों द्वारा अपनाना ही सबसे बड़ी उपलब्धि : प्रोफेसर समर सिंह

एचएयू कुलपति ने विश्वविद्यालय के तिलहन अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र में चल रहे प्रयोगों का लिया जायजा

वाटिका@हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई नई तकनीकों व विभिन्न किस्मों की उन्नत किस्मों को किसानों द्वारा अपनाया जाना ही वैज्ञानिकों के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि है। वैज्ञानिक किसानों की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए विभिन्न माध्यमों से उनकी आय में बढ़ोतरी के लिए प्रयासरत है।

ये विचार उन्होंने विश्वविद्यालय के तिलहन अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र में चल रहे प्रयोगों का जायजा लेने के उपरांत वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि कई बार देखने में आया है कि ऐसी तकनीक व उपकरण को इजाद कर लिया जाता है, जो आम किसान की पहुंच से बाहर होती है, ऐसे में किसान को उसका फायदा नहीं मिल पाता। इसलिए कृषि क्षेत्र में विकसित की जाने वाली नई तकनीक हर किसान की पहुंच तक होनी चाहिए। किसी भी उपकरण की कीमत व उसके अधिकाधिक उपयोग को ध्यान में रखकर ही नई तकनीक खोजनी चाहिए। प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि हरियाणा प्रदेश में तिलहन अनुभाग के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित सरसों व राया की उन्नत किस्मों से ही उत्पादन में अद्वितीय बढ़ोतरी हुई है, जो विश्वविद्यालय के लिए गौरव की बात है। इसी वजह से विश्वविद्यालय की तिलहन अनुभाग की टीम को वर्ष 2012-13 व 2015-16 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा सर्वश्रेष्ठ केंद्र पुरस्कार से नवाजा जा चुका है। इस दौरान कुलपति महोदय ने अनुसंधान कार्यों के अलावा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित परियोजनाओं का भी अवलोकन किया। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे सभी फसलों की हाइब्रिड किस्मों को विकसित करने पर जोर दें। उन्होंने वैज्ञानिकों द्वारा किए गए अनुसंधान कार्यों की सराहना करते हुए भविष्य में भी पूरी लगन व मेहनत से कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ....पांच बजे....

दिनांक 1.1.2021 ...पृष्ठ संख्या...—...कॉलम...—...

एचएयू कुलपति ने विश्वविद्यालय के तिलहन अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र में चल रहे प्रयोगों का लिया जायजा

किसानों का वैज्ञानिकों की नई किस्मों व तकनीकों को अपनाना ही सबसे बड़ी उपलब्धि : प्रो. समर सिंह

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई नई तकनीकों व विभिन्न किस्मों की उन्नत किस्मों को किसानों द्वारा अपनाया जाना ही वैज्ञानिकों के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि है। वैज्ञानिक किसानों की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए विभिन्न माध्यमों से उनकी आय में बढ़ोतरी के लिए प्रयासरत है। ये विचार उन्होंने विश्वविद्यालय के तिलहन अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र में चल रहे प्रयोगों का जायजा लेने के उपरांत वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि कई बार देखने में आया है कि ऐसी तकनीक व उपकरण को इजाद कर लिया जाता है, जो आम किसान की पहुंच से बाहर होती है, ऐसे में किसान को उसका फायदा नहीं मिल पाता। इसलिए कृषि क्षेत्र में विकसित की जाने वाली नई तकनीक हर किसान की पहुंच तक होनी चाहिए। किसी

भी उपकरण की कीमत व उसके अधिकाधिक उपयोग को ध्यान में रखकर ही नई तकनीक खोजनी चाहिए। प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि हरियाणा प्रदेश में तिलहन अनुभाग के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित सरसों व राया की उन्नत किस्मों से ही उत्पादन में अद्वितीय बढ़ोतरी हुई है, जो विश्वविद्यालय के लिए गौरव की बात है। इसी वजह से विश्वविद्यालय की तिलहन अनुभाग की टीम को वर्ष 2012-13 व 2015-16 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा सर्वश्रेष्ठ केंद्र पुरस्कार से नवाजा जा चुका है। इस दौरान कुलपति महोदय ने अनुसंधान कार्यों के अलावा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित परियोजनाओं का भी अवलोकन किया। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे सभी फसलों की हाइब्रिड किस्मों को विकसित करने पर जोर दें। उन्होंने वैज्ञानिकों द्वारा किए गए अनुसंधान कार्यों की सराहना करते हुए भविष्य में भी पूरी लगन व मेहनत से कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

लगभग पांच गुणा बढ़ा राया व तिलहन का उत्पादन : डॉ. ए.के. छाबड़ा

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता व आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि वर्ष 1972-73 में राया व सरसों का उत्पादन प्रति हेक्टेयर 464 किलोग्राम था जो वर्ष 2017-18 में बढ़कर 2018 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गया है, जो विश्वविद्यालय के लिए बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय ने अब तक राया व सरसों की 20 किस्मों को विकसित किया है, जिसमें 11 राज्य व 9 राष्ट्रीय स्तर की हैं। मनुष्य के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए तेल की महत्ता व गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए अनुभाग की ओर से संकर किस्मों को विकसित करने का कार्य प्रगति पर है। तिलहन अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. रामअवतार ने कुलपति महोदय को सरसों व राया की विभिन्न किस्मों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यहां से विकसित सरसों की आर एच 725 उन्नत किस्म बारानी व सिंचित क्षेत्र के लिए समय पर बिजाई के लिए उत्तम किस्म है। इसकी औसत पैदावार भी 25-26 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है और इसमें तेल की मात्रा भी लगभग 40 प्रतिशत तक होती है। यही कारण है कि इस किस्म के बीज की न केवल हरियाणा बल्कि राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब व बिहार में भी बहुत अधिक मांग है। इस अवसर पर कुलपति के ओएसडी डॉ. एमएस सिद्धपुरिया के अलावा अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. नीरज कुमार, डॉ. दलीप सिंह, डॉ. राकेश पूनिया, डॉ. निशा, डॉ. विनोद गोयल, डॉ. नीता लाकड़ा, डॉ. विवेक, डॉ. महावीर, डॉ. राजवीर सिंह, डॉ. मनजीत, रोहित आदि मौजूद थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम दैनिक भास्कर

दिनांक 1.1.2021 पृष्ठ संख्या 4 कॉलम 3-8

• शहर की शान : एचएयू, जीजेयू, लुवास, सीआईआरबी, आईटीआई ने एजुकेशन में दिलाई पहचान

शिक्षा, शोध और खोज में हिसार के वैज्ञानिकों की कायल है पूरी दुनिया

एचएयू • अटल रैंकिंग में देश में सर्वोत्तम कृषि विश्वविद्यालय

- अटल रैंकिंग में एचएयू बना देश का सर्वोत्तम कृषि विवि, शिक्षा क्षेत्र में बढ़ा हरियाणा का गौरव।
- सरकारी व सरकारी सहायता प्राप्त विश्वविद्यालयों के सभी विश्वविद्यालयों की श्रेणी में एचएयू देशभर में तीसरे स्थान पर।
- विश्वविद्यालय की ओर से इस रैंकिंग के लिए 2019 में आवेदन किया
- आईसीएआर रैंकिंग में एचएयू को देश में तीसरा स्थान मिला।
- एचएयू ने देशभर के किसानों के लिए गेहूं, जई समेत 25 किस्मों को तैयार करने में सफलता पाई।

लुवास • आईसीएआर रैंकिंग में यूनिवर्सिटी तीसरे स्थान पर

- आईसीएआर रैंकिंग में लाला लाजपत राय यूनिवर्सिटी ऑफ वेटरनरी एंडी एनीमल साइंस ने वैटरनरी विवि में देश में तीसरा स्थान पाया। पहले यह स्थान 11वें स्थान पर था, एक प्रयास में आठ पायदान बढ़े।
- विवि में प्रदेश की एकमात्र इन विट्रो फर्टिलाइजेशन लैब शुरू की गई, जिसमें फिलहाल 20 स्टाफ की तैनाती की गई है, जिसके माध्यम से अच्छे नस्ल के बछड़े पैदा किए जा सकेंगे।
- पचास हजार से अधिक पशुपालकों को ऑनलाइन ट्रेनिंग देकर बीमारियों से बचाव के टिप्स दिए गए।

जीजेयू • ओवरऑल कैटेगिरी में भारत में 19वें पायदान पर

- दा टाइम्स हायर एजुकेशन वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग में 801 से 1000 रैंक बैंड में मिला स्थान, भारत में ओवरऑल कैटेगरी में जीजेयू का 19वां स्थान।
- नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क 2020 में स्टूडेंट्स को मिला 94वां स्थान।
- फार्मेसी में ऑलओवर इंडिया में 31वां स्थान
- ग्रीन मैट्रिक्स वर्ल्ड मोस्ट स्टेनेबल रैंकिंग इंडोनेशिया 2020 में मिला 12वां स्थान।
- अटल रैंकिंग ऑफ इंस्टीट्यूशन ऑन इनोवेशन एचीवमेंट 2020 में यूनिवर्सिटी ने 6 से 25 बैंड के बीच बनाया स्थान।
- यूनिवर्सिटी एच इंडेक्स-28

सीआईआरबी • एक साथ भैंस के 8 क्लोन का रिकॉर्ड

- संस्थान के वैज्ञानिकों ने मुर्रह नस्ल भैंस के 8 क्लोन और हिसार गौरव क्लोन का रिक्लोन तैयार कर देश से लेकर विदेश भर में प्रसिद्धि पाई।
- मीथेन गैस को कम करने के लिए विशेष प्रकार की किट तैयार की गई।
- पशुओं में 21 दिन के अंदर ही गर्भवती होने का पता लगाने के लिए प्रेग्नेंसी किट तैयार की गई, जिसमें करीब चार साल का समय लगा।
- संस्थान ने हरियाणा, यूपी व राजस्थान के 50 हजार किसानों को पशुपालन व बीमारियों से बचाव की ट्रेनिंग दी।

आईटीआई • संस्थान के 180 विद्यार्थियों को मिला रोजगार

- शहर के राजकीय बहुतकनीकी के 180 छात्रों का सिलेक्शन विभिन्न कंपनियों में ऑफ कैंपस इंटरव्यू के जरिये साल में हुआ। प्रधानाचार्य राजीव सरदाना ने बताया कि यह इंटरव्यू ऑनलाइन मोड तथा टेलीफोनिक हुए।
- टीपीओ प्रदीप कुमार ने बताया कि राजकीय बहुतकनीकी हिसार की स्थापना को 25 से अधिक वर्ष हो चुके हैं। पास आउट विद्यार्थी विभिन्न राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय कंपनियों में उच्च पदों पर कार्यरत है। 2020 बैच के विभिन्न विभागों से 180 छात्रों का चयन हुआ है। एटीपीओ सुनील भुटानी ने बताया कि पिछले हफ्ते ही चार स्टूडेंट्स का चयन हुआ है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....दैनिक भास्कर....

दिनांक 1....1...2021...पृष्ठ संख्या.......4..........कॉलम....3-8.........

• शहर की शान : एचएयू, जीजेयू, लुवास, सीआईआरबी, आईटीआई ने एजुकेशन में दिलाई पहचान

शिक्षा, शोध और खोज में हिसार के वैज्ञानिकों की कायल है पूरी दुनिया

एचएयू • अटल रैंकिंग में देश में सर्वोत्तम कृषि विश्वविद्यालय

» अटल रैंकिंग में एचएयू बना देश का सर्वोत्तम कृषि विवि, शिक्षा क्षेत्र में बढ़ा हरियाणा का गौरव।

» सरकारी व सरकारी सहायता प्राप्त विश्वविद्यालयों के सभी विश्वविद्यालयों की श्रेणी में एचएयू देशभर में तीसरे स्थान पर।

» विश्वविद्यालय की ओर से इस रैंकिंग के लिए 2019 में आवेदन किया

» आईसीएआर रैंकिंग में एचएयू को देश में तीसरा स्थान मिला।

» एचएयू ने देशभर के किसानों के लिए गेहूं, जई समेत 25 किस्मों को तैयार करने में सफलता पाई।

लुवास • आईसीएआर रैंकिंग में यूनिवर्सिटी तीसरे स्थान पर

» आईसीएआर रैंकिंग में लाला लाजपत राय यूनिवर्सिटी ऑफ वेटरनरी एंडी एनीमल साइंस ने वैटरनरी विवि में देश में तीसरा स्थान पाया। पहले यह स्थान 11वें स्थान पर था, एक प्रयास में आठ पायदान बढ़े।

» विवि में प्रदेश की एकमात्र इन विट्रो फर्टिलाइजेशन लैब शुरू की गई, जिसमें फिलहाल 20 स्टाफ की तैनाती की गई है, जिसके माध्यम से अच्छे नस्ल के बछड़े पैदा किए जा सकेंगे।

» पचास हजार से अधिक पशुपालकों को ऑनलाइन ट्रेनिंग देकर बीमारियों से बचाव के टिप्स दिए गए।

जीजेयू • ओवरऑल कैटेगिरी में भारत में 19वें पायदान पर

» दा टाइम्स हायर एजुकेशन वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग में 801 से 1000 रैंक बैंड में मिला स्थान, भारत में ओवलऑल कैटेगरी में जीजेयू का 19वां स्थान।

» नेशनल इंस्टीटियूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क 2020 में स्टूडेंट्स को मिला 94वां स्थान।

» फार्मेसी में ऑलओवर इंडिया में 31वां स्थान

» ग्रीन मैट्रिक्स वर्ल्ड मोस्ट स्टेनेबल रैंकिंग इंडोनेशिया 2020 में मिला 12वां स्थान।

» अटल रैंकिंग ऑफ इंस्टीटियूशन ऑन इनोवेशन एचीवमेंट 2020 में यूनिवर्सिटी ने 6 से 25 बैंड के बीच बनाया स्थान।

» यनिवर्सिटी एच इंडेक्स-28

सीआईआरबी • एक साथ भैंस के 8 क्लोन का रिकॉर्ड

» संस्थान के वैज्ञानिकों ने मुर्राह नस्ल भैंस के 8 क्लोन और हिसार गौरव क्लोन का रिक्लोन तैयार कर देश से लेकर विदेश भर में प्रसिद्धि पाई।

» मीथेन गैस को कम करने के लिए विशेष प्रकार की किट तैयार की गई।

» पशुओं में 21 दिन के अंदर ही गर्भवती होने का पता लगाने के लिए प्रेग्नेंसी किट तैयार की गई, जिसमें करीब चार साल का समय लगा।

» संस्थान ने हरियाणा, यूपी व राजस्थान के 50 हजार किसानों को पशुपालन व बीमारियों से बचाव की टेनिंग दी।

आईटीआई • संस्थान के 180 विद्यार्थियों को मिला रोजगार

» शहर के राजकीय बहुतकनीकी के 180 छात्रों का सिलेक्शन विभिन्न कंपनियों में ऑफ कैंपस इंटरव्यू के जरिये साल में हुआ। प्रधानाचार्य राजीव सरदाना ने बताया कि यह इंटरव्यू ऑनलाइन मोड तथा टेलीफोनिक हुए।

» टीपीओ प्रदीप कुमार ने बताया कि राजकीय बहुतकनीकी हिसार की स्थापना को 25 से अधिक वर्ष हो चुके हैं। पास आउट विद्यार्थी विभिन्न राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय कंपनियों में उच्च पदों पर कार्यरत है। 2020 बैच के विभिन्न विभागों से 180 छात्रों का चयन हुआ है। एटीपीओ सुनील भुटानी ने बताया कि पिछले हफ्ते ही चार स्टडेंटस का चयन हआ है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब केसरी.....

दिनांक 1...1...2021...पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.2-3.....

'कृषि विज्ञान केंद्र ने मनाया स्वच्छता पखवाड़ा'

मंडी आदमपुर, 31 दिसम्बर (भारद्वाज): गांव सदलपुर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के प्रांगण में 16 से 31 दिसम्बर तक स्वच्छता पखवाड़ा आयोजित किया गया।

केंद्र के कोऑर्डिनेटर डा. नरेंद्र कुमार ने बताया इस दौरान केंद्र के प्रांगण पर सफाई अभियान, वृक्षों की कटाई-छंटाई, भाषण प्रतियोगिता, पौधरोपण, ऑफिस व आस-पास की सफाई, सफाई पर पेंटिंग, किचन गार्डेनिंग, वर्मी कम्पोस्टिंग आदि विभिन्न प्रकार की गतिविधियां आयोजित की गई तथा कृषक उपज व्यापार और वाणिज्य (संवर्धन और सरलीकरण) विधेयक, 2020 और कृषक (सशक्तिकरण व संरक्षण) कीमत आश्वासन और कृषि सेवा पर करार विधेयक 2020 बिलों पर भी विस्तारपूर्वक चर्चा की।

गांव सदलपुर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र में स्वच्छता पखवाड़ा मनाते डा. नरेंद्र व अन्य।